Page 1

MA. Semester II

Unit I, Paper 5, CC5

Cognitive Psychology

Topic — Perceptual learning

(2) यदि दो व्यक्ति एक ही घटना या वस्तु का प्रत्यक्षण करते होते हैं तो दोनों का प्रत्यक्षण एक समान न होकर एक दूसरे से भिन्न होता है अर्थात प्रत्यक्षण में वैयक्तिक भिन्नता होती है

व्यक्ति का प्रत्यक्षण भिन्न कारकों द्वारा प्रभावित होता है इनमें से एक प्रमुख कारक सीखना है व्यक्ति अपने बीते दिनों में भिन्न-भिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करते हैं इन अनुभवों में विभिन्नता होती है जिनके कारण एक ही वस्तु या घटना का प्रत्यक्षण व्यक्ति भिन्न-भिन्न ढंगों से करता है जैसे राम एक व्यक्ति है जो सोहन के साथ उद्दंडता के साथ व्यवहार करता है और मोहन के साथ विनम्रता के साथ व्यवहार करता है अर्थात एक ही व्यक्ति राम के प्रति सोहन का कटुता का है परन्तु मोहन का गत अनुभव मधुरता का है अत: सोहन राम को एक अभद्र व्यक्ति होने का प्रत्यक्षण करेगा परन्तु मोहन उसी राम को एक भद्र व्यक्ति होने का प्रत्यक्षण करेगा। अत: उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति की अनुभूति या मोटे तौर पर उसके अधिगम या सीखना का प्रत्यक्षण काफी प्रभाव पड़ता है।

प्रत्यक्षात्मक सीखना अपने ज्ञात अनुभूति के फलस्वरूप सीखी गयी एक विशेष क्षमता है। ई.जे. गिब्सन (Gibson, 1969) के शब्दों में परिभाषित किया गया है जो निम्न है | वातावरण के उत्तेजनाओं से प्राप्त अनुभूतियां अभ्यास के फलस्वरूप व्यक्ति की उस क्षमता में हुई वृद्धि को प्रत्यक्षात्मक सीखना कहा जाता है जिसके द्वारा वह वातावरण से अधिक से अधिक सूचनाओं का ग्रहण कर पाता है अतः स्पष्ट है कि प्रत्यक्षात्मक सीखना एक प्रकार का संज्ञानात्मक सीखना है और इससे यह पता चलता है कि प्रत्यक्षण की प्रक्रिया सीखना द्वारा काफी प्रभावित होता है।

गिब्सन ने यह बतलाया है कि जब कोई व्यक्ति किसी कार्य विशेषकर तकनीकी कार्य करने का विशेष रूप से प्रशिक्षण लिए होता है तो उस कार्य से संबंधित वस्तुओं का प्रत्यक्षण अन्य दूसरे व्यक्ति जिन्हें इस तरह का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं है, से भिन्न होता है। प्रत्यक्षण में इस तरह के अन्तर के कारण प्रत्यक्षणात्मक सीखना है। गिब्सन के अनुसार एक प्रशिक्षित पक्षीविज्ञानी भिन्न-भिन्न प्रकार की पक्षियों की भाषाओं तथा आपस में किये गये संचार को आसानी से समझ लेता है परन्तु सामान्य व्यक्ति के लिए ऐसा करना कठिन होता है हाँ जब कोई सामान्य व्यक्ति भी उस तरह का प्रत्यक्षणात्मक सीखना पूरा कर लेता है तो उसे पक्षियों की भाषाओं का समझने में कोई कठिनाई नहीं रह जाती है।

देखा गया है कि कोई नेत्रहीन व्यक्ति अपने छड़ी को जमीन पर पटककर या ठुककर जिससे विशेष आवाज उत्पन्न होता है के आधार पर उस जमीन के आकार तथा संरचना का प्रत्यक्षण करता है, और उसी दिशा में कदम बढ़ाता है। सामान्य व्यक्ति के लिए इस ढंग के आवाज से इस तरह का अर्थ निकालना कठिन है।

अतः प्रत्यक्षणात्मक सीखना व्यक्ति के उस क्षमता से संबन्धित होता है जिसके सहारे वह वातावरण के वस्तुओं के बारे में विशेष रूप से अर्थ निकालने में समर्थ होता है।

Kumar Patel
Maharaja College, Ara.